विषय	हिंदी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	**P2: मध्यकालीन कविता -1**
इकाई सं. एवं शीर्षक	**M36: भूषण का काव्य**
इकाई टैग	**HND_P2_M36**

निर्माता समूह	
प्रमुख अन्वेषक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
प्रश्नपत्र समन्वयक	**प्रो. कृष्ण कुमार सिंह** अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : kks5260@gmail.com
इकाई लेखक	**डॉ. रूपेश कुमार सिंह** सहायक प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : dr.roopeshsingh@gmail.com
इकाई समीक्षक	**प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित** प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र) ईमेल : suryadixit123@gmail.com
भाषा संपादक	**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : anandsharma_64@yahoo.co.in

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. भूषण और उनका युग
4. भूषण की रचनाएं
5. भूषण के काव्य की कथावस्तु
6. भूषण की काव्यकला
7. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप-

- भूषण और उनके युग के बारे में जान सकेंगे
- भूषण की रचनाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे और
- भूषण के काव्य की कथावस्तु और काव्य कला से परिचित होंगे।

2. प्रस्तावना

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन करते हुए जिस काल के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता देखी उसे अलग कालखंड मानकर उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया। इस दृष्टि से देखा जाए तो वीरगाथात्मक रचनाओं की प्रचुरता हिंदी साहित्य के प्रारंभिक काल में रही, जिसे शुक्ल जी ने 'वीरगाथा काल' नाम दिया। भूषण इस काल से लगभग तीन सौ साल बाद हुए, जब श्रृंगार रस का बोलबाला था। भूषण ने युगीन प्रवृत्तियों के विपरीत अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाले नायकों वीर शिवाजी और छत्रसाल को वर्ण्य विषय बनाकर काव्य रचना की। इनके प्रभाव में वीर रस के अनेक उत्कृष्ट कवियों का आविर्भाव हुआ। हिंदी के प्रारंभिक साहित्येतिहास लेखक गार्सा-द-तासी व जार्ज ग्रियर्सन ने भूषण की चर्चा नहीं की है। इसके पीछे इन लेखकों का उपनिवेशवादी दृष्टिकोण था। वे किसी ऐसी भावधारा को भारतीय जनमानस के सामने नहीं लाना चाहते थे, जिससे उनके अंदर आत्म-गौरव की भावना जागृत हो और अग्रेजी सत्ता को किसी प्रकार के खतरे का सामना करना पड़े। यद्यपि आदिकाल में भी वीर रस प्रधान रचनाएं हुईं किन्तु आदिकाल के रचनाकारों के नायकों का यथार्थ से वैसा गहरा रिश्ता न था जैसा भूषण के नायक शिवाजी और छत्रसाल का था। अत: भूषण अपने युग के अन्य कवियों से विशिष्ट और महत्वपूर्ण हैं।

3. भूषण और उनका युग

भूषण कानपुर के समीप तिकवांपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। इनके जन्म की तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है किन्तु इतना स्पष्ट है कि ये इतिहास प्रसिद्ध वीर शिवाजी के समकालीन थे। अबतक भूषण के वास्तविक नाम का पता नहीं लगा है। माना जाता है कि चित्रकूट के राजा रूद्रशाह सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया और इसी उपनाम से ये प्रसिद्ध हुए। एक जनश्रुति के आधार पर कुछ विद्वान इन्हें प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम का भाई मानते हैं। भूषण मराठा शासक शिवाजी और पन्ना के शासक छत्रसाल सहित कई शासकों के दरबार में गए किन्तु किसी के स्थाई दरबारी नहीं बने।

भूषण का युग उत्तर मध्यकाल था। उस समय उत्तर भारत की केन्द्रीय सत्ता मुग़ल बादशाह औरंगजेब के हाथ में थी तथा दक्षिण भारत में अस्थिरता के बीच मराठों का प्रभुत्व था। औरंगजेब का शासन भय और आतंक पर आधारित था, जिससे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही त्रस्त थे। कट्टर धार्मिक होने के कारण उसकी नीतियाँ हिन्दूविरोधी थीं, वह धार्मिक स्वतंत्रता के लिए हिन्दुओं से जजिया कर वसूलता था जिसके कारण औरंगजेब के प्रबल शत्रु मराठा शासक शिवाजी के प्रति हिन्दू जनमानस की सहानभूति थी। साहित्य के क्षेत्र में अधिकतर कवियों ने नायिका भेद का सहारा लेते हुए स्त्री के शरीर का मांसल चित्रण किया। इसके लिए 'नख-शिख वर्णन' और 'षट्ऋतुवर्णन' पर अलग से पुस्तकें लिखी गईं। रीतिकाल के ऐसे कवियों के कारण ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल को कहना पड़ा कि 'रीति ग्रंथों की इस परम्परा द्वारा साहित्य के विकास में बाधा पड़ी।' भूषण ने श्रृंगार के बजाय वीर रस से ओत-प्रोत रचना की किन्तु रीति पद्धति का ध्यान रखा।

4. भूषण की रचनाएँ

भूषण की अब तक केवल एक रचना 'शिवराज भूषण' प्रकाश में आई है, इसके अतिरिक्त शिवसिंह सेंगर के इतिहास ग्रन्थ में अन्य तीन रचनाओं 'भूषण हजारा', 'भूषण उल्लास' और 'दूषण उल्लास' का उल्लेख मिलता है, जो अप्राप्य हैं। भूषण के नाम से प्रचलित अन्य दो ग्रन्थ 'छत्रसाल दशक' और 'शिवा बावनी' फुटकर छंदों का संग्रह है। वास्तव में भूषण ने इन नामों से कोई ग्रन्थ लिखा ही नहीं। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार इन दोनों ग्रंथों के लिए उत्तरदायी भाटिया बुक सेलर्स गोवर्धनदास लक्ष्मीदास (बम्बई) है जिसने 1890 ई. में 'शिवा बावनी' और 'छत्रशाल दशक' का पहला प्रकाशन किया था। 'शिवा बावनी' का संग्रह भाटों से सुनी सुनाई कविता और प्राचीन ग्रंथों से मिलने वाली भूषण की कविता का संकलन करके किया गया है तथा 'बावनी' नाम के लिए एक किंवदती का सहारा लिया है जबकि 'छत्रसालदशक' का कोई आधार नही है। कहा जाता है कि छत्रसाल की प्रशंसा में कुछ फुटकर छंद प्राप्त हुए जिसे उक्त प्रकाशक ने भूषण के नाम से छाप दिया। अत: भूषण का प्रामाणिक ग्रन्थ 'शिवराज भूषण' तथा कुछ फुटकर छंद मात्र ही हैं।

6. भूषण के काव्य की कथावस्तु

भूषण की प्राप्त रचनाओं में तत्कालीन मुग़ल बादशाहों बाबर, अकबर, हुमायूँ आदि की उदारता को स्मरण करते हुए औरंगजेब की बर्बरता के कारण उसकी आलोचना और उससे लोहा लेने वाले मराठा शासक शिवाजी की प्रशंसा की गई है। इसके साथ ही उनके काव्य में तत्कालीन हिन्दू जनमानस की आकांक्षा को भी अभिव्यक्ति मिली है।

औरंगजेब ने अपने सगे सम्बन्धियों की हत्या और पिता को बंदी बनाकर अनैतिक तरीके से सिंहासन पर अधिकार कर लिया था। भूषण ने लिखा है-

'किबलेके ठौर बाप बादशाह साहजहाँ वाको कैद कियो मानो मक्के आगिलाई है।
बड़ो भाई दारा वाको पकरि कै मारिडारयो मेहराहू नाहिं माको जायो सगाभाई है।
खाई कै कसम त्यों मुराद को मनाय लियो फेरिताहू साथ अति कीन्ही तै ठगाई है।
भूषण सुकबि कहै सुनौ अवरंगजेब ऐसे ही अनीति करि पातसाही पाई है।'

औरंगजेब बड़ा ही बर्बर शासक था। उसने हिन्दुओं पर पुन: जजिया कर लगा दिया व उनके मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया। उसने जिस आतंक व अत्याचार के माध्यम से सत्ता हस्तगत की थी, उसका असर उसके ऊपर आजीवन रहा। वह किसी के ऊपर विश्वास नहीं करता था। वह भय द्वारा अपनी राजसत्ता कायम रखते हुए उसके विस्तार के लिए सदा प्रयत्नशील रहा। पूर्ववर्ती मुग़ल बादशाह ऐसे न थे। उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार हिन्दुओं की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचा कर नहीं किया था। अकबर जैसा मुग़ल बादशाह हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मों के अनुयायियों में लोकप्रिय था। बाबर, अकबर तथा हुमायूँ ने अपने अवाम के लिए शासन किया। उनकी धार्मिक सहिष्णुता के सम्बन्ध में भूषण का एक छंद है-

'आदिकी न जानो देवी-देवता न मानो साच कहूँ सो पिछानो बात कहत हौं अबकी।
बब्बर अकब्बर हिमायूँ हद बाँधि गए हिन्दू औ तुरुक की कुरान बेद-ढबकी।
इन पातसाहन में हिन्दुन की चाह हुती जहाँगीर साहजहाँ साख पूरै तबकी।'

अकबर के पूर्व मुसलमान विदेशी समझे जाते थे और उनकी छवि आक्रमणकारियों की थी। हिन्दुस्तान विजय में

कइयों ने धर्म का सहारा लिया, इसलिए वे धार्मिक रूप से कट्टर थे और उनकी इसी धार्मिक कट्टरता के कारण हिन्दू जनता उनके शासन में विश्वास नहीं करती थी बल्कि उन्हें भय और घृणा की दृष्टि से देखती थी। ऐसे में अपने शासन को स्थाई बनाए रखने के लिए इन शासकों ने आतंक और दमन का सहारा लिया और हिन्दुओं के आत्मविश्वास को तोड़ने के लिए धार्मिक उत्पीड़न किया। धार्मिक स्वतंत्रता के लिए गैर मुसलमानों को जजिया कर देना पड़ता था लेकिन औरंगजेब के पूर्ववर्ती मुग़ल बादशाहों ने अपनी उदारनीति के चलते मुग़ल शासन के प्रति हिन्दू जनमानस में आस्था पैदा कर दी थी, जो औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता के कारण समाप्त हो गई। हिन्दू जनमानस पुन: असहाय महसूस कर रहा था। ऐसे में भूषण ने औरंगजेब के विरुद्ध लड़ने वाले इतिहासप्रसिद्ध वीर नायक शिवाजी की वीरता के साथ उनके शासन की प्रशंसा की। शिवाजी ने जिस राज्य का निर्माण किया था वह अकबर के आदर्शों पर आधारित था जहाँ प्रत्येक धर्म, जाति, लिंग के लोगों का सम्मान था। इस संबंध में भूषण का एक छंद है-

‘अति मतवारे दुरदै निहारे जहाँ तुरगन ही में चंचलाई-परकीति है।
भूषण कहत जहाँ पर लगैं कों कोक पच्छिन्नहिं माहिं बिछुरन-रीति है।
गुनि-गन चोर जहाँ एक चित्त ही के लोग बाँधे जहाँ एक सरजा की गुन प्रीति है।
कंप कदली में बैर बृच्छ बदरी में सिवराज अदली के राज में यौं राजनीति है।’

स्पष्ट है कि शिवाजी के राज्य और राजनीति का भूषण ने जैसा चित्रण किया है वह एक आदर्श स्थिति है लेकिन यथार्थ में इसका कुछ अंश अवश्य विद्यमान था जिसका भूषण के अन्य छंदों से पता चलता है। शिवाजी मक्का जाने वालों को परेशान नहीं करते थे - ‘मक्का ही के मिसि उतरत दरियाव है।’ के प्रजा के साथ सज्जनता, दयालुता, दीनता, नम्रता एवं कोमलता का व्यवहार करते थे- ‘सज्जनता और दयालुता दीनता कोमलता झलकै परजा मै।’ आदि। शिवाजी को भूषण ने एक उदार शासक के रूप में चित्रित किया है। भूषण की इन्हीं विशेषताओं के कारण कुछ विद्वान इन्हें ‘राष्ट्रकवि’ मानते हैं। राष्ट्रकवि के रूप में मानने वाले विद्वानों का मत है कि ‘औरंगजेब के अत्याचारों से केवल हिन्दू जनता ही नहीं बल्कि बहुसंख्यक मुसलमान भी त्रस्त थे। फिर भूषण ने जहाँ औरंगजेब का विरोध किया है वहीं पूर्ववर्ती मुग़ल बादशाहों की प्रशंसा की है। उदहारण के लिए ‘बब्बर अकबर के बिरद बिसारे तैं|’ वाली पंक्ति का उल्लेख किया जाता है किन्तु इस संबंध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस प्रकार की एक या दो पंक्तियाँ ही हैं जबकि हिन्दुओं की अस्मित, गौरव और राज्य विस्तार सम्बंधित दर्जन भर से अधिक पूरे-पूरे छंद हैं। उदाहरण-

‘काल मही सिवराज बली हिंदुवान बढ़ाइबे कौं ऊर उटै।
भूषण भू निरम्लेच्छ करी वहै म्लेच्छन मारिबे कौं रन जूटै।
हिन्दु बचाय इही अमरेस चंदावत लौं कोउ टूटै सु टूटै।
चंद अलोक तिलोक सुखी यहि कोक- अभाग जो सोग न छूटै।’

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि भूषण के नायक शिवाजी किस तरह से पृथ्वी पर हिन्दुओं का राज बढ़ाने के मंसूबे बाँधते हैं तथा पृथ्वी (हिन्दुस्तान) को मुसलमानों से रहित करना चाहते हैं। भूषण के काव्य में मुसलमानों के लिए जगह-जगह कटूक्तियाँ कही गईं हैं और उन्हें विदेशी माना गया है। इसलिए आज की तिथि में भूषण को पढ़कर कोई भी मुसलमान उन्हें राष्ट्रीय कवि नहीं मानेगा। भारत में राष्ट्रीयता का विकास स्वतंत्रता के संघर्ष के साथ हुआ। भूषण के समय में देश छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था। केंदीय सत्ता मुगलों के हाथ में होने के बावजूद उसकी सीमाएँ लगातार बदलती रहती थीं। केंद्र के साथ किसी राजा व उसकी प्रजा की आस्था नहीं जुड़ी थी, भय इसका एक मात्र आधार था। ऐसे में उस समय एक बृहद् भारत की कल्पना कर भूषण को राष्ट्रीय कवि के रूप में चित्रित करना उचित नहीं है।

शिवाजी के अतिरिक्त भूषण ने छत्रसाल सहित कुछ अन्य राजाओं जिनमें- साहूजी, जयसिंह, रामसिंह, अवधूत सिंह, अनिरुद्ध सिंह, भगवंत राय सहित कुमाऊं और गढ़वाल के नरेशों के संबंध में फुटकर छंद भी लिखे, जिसमें उनकी का वीरता वर्णन है।

7. भूषण की काव्यकला

किसी काव्य अथवा कवि की सफलता में चुना गया वर्ण्य विषय अत्यंत महत्व रखता है। भूषण ने अपने काव्य का वर्ण्य विषय इतिहासप्रसिद्ध वीर नायक शिवाजी को चुना, जो उनके ओजमयी काव्य के सर्वथा अनुकूल थे। भूषण के काव्य की सफलता का आधा श्रेय यदि भूषण को है तो शेष आधा श्रेय उनके नायक शिवाजी को जाता है, जिनकी वीरता के किस्से भारत के जन-जन में प्रचलित हैं।

भूषण ने रीतिबद्ध कवियों का अनुसरण करते हुए 'शिवराज भूषण' को एक अलंकार ग्रन्थ बनाया है किन्तु इस ग्रन्थ में अलंकारों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। अन्य रीतिबद्ध कवियों की तरह भूषण ने 'लक्षण-उदाहरण' की परिपाटी का उपयोग किया है। अलंकारों का भेद करते हुए पहले छंद में उसका लक्षण बताया है उसके बाद अगले छंद में उदाहरण प्रस्तुत किया है लेकिन कहीं-कहीं लक्षण दिया गया है तो उदाहरण नहीं है और उदाहरण है तो लक्षण नहीं है। लक्षण और उदाहरणों का ताल-मेल भी बिगड़ा है। उदहारण देखें-

पीय पहारन पास न जाहु यों तीय बहादुर कों कहें सोखें।
कौन बच्यौ है नवाब तुम्हें भनि भूषन भ्वैसिला भूप के रोखें।
बंदि कियौ है साइस्तहू खाँ जसवंत से भाऊ करन्न के दोखें।
सिंह सिवाजू के बीरन सौं गे अमीर न बंचि गुनीजन घोखें।।

इस उदाहरण में शाइस्ता खां, कारण और भाऊ के साथ शिवाजी ने जो किया उसे सुनकर शत्रु पक्ष की स्त्रियों को अपने पति के सुरक्षित न होने का भ्रम पैदा हो जाता है, किन्तु यह उदाहरण ठीक नहीं हैं क्योंकि भ्रम पूर्ण विश्वास के साथ नहीं हो सकता है। भूषण के काव्य के अध्ययन से ऐसा लगता है कि भूषण को अलंकारों का ज्ञान था किन्तु रीति की परिपाटी में बंधना उनका उद्देश्य नहीं था। ये केवल शिवाजी का यशोगान करना चाह रहे थे। भूषण ने जहाँ किसी बंधन को स्वीकार नहीं किया वहां रचना अति सुन्दर बन पड़ी हैं। इससे पता चलता है कि भूषण अगर रीतिमुक्त रचना करते तो वह और भी उत्कृष्ट होती।

'शिवराज भूषण' में वीर रस से ओत-प्रोत शिवाजी की वीरता का वर्णन मिलता है। वीर के चार प्रकार होते हैं- युद्धवीर, दयावीर, दानवीर और धर्मवीर। भूषण की रचना में इन चारों प्रकार की वीरता का चित्रण हुआ है। युद्धवीर को अन्य तीनों प्रकार की वीरों में प्रधानता दी गई है इसलिए युद्धवीर का उदाहरण स्वरूप एक छंद यहाँ दृष्टव्य है-

साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद-विहद नगारन के
नदी नद मद गैबरन के रलत हैं।
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है

तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

शिवराज भूषण में वीर रस के अतिरिक्त श्रृंगार तथा हास्य रस को छोड़कर अन्य सभी रस सहकारी रूप में आये हैं। रौद्र और भयानक तो वीर रस के अनुषंगी हैं। युद्ध के बाद युद्ध क्षेत्र के वर्णन में वीभत्स रस का आना स्वाभाविक है। पराजित सेना की स्त्रियों में करुण रस का धन-दौलत लुट जाने पर निर्वेद पैदा होने के कारण शांत रस का परिपाक हुआ है।

भूषण का भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उन्होंने ब्रजभाषा का आश्रय लेते हुए संस्कृत, प्राकृत, बुन्देली, अवधी, खड़ी बोली, मराठी तथा अरबी-फारसी आदि के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। रीतिकाल में ब्रजभाषा का प्रयोग ब्रज क्षेत्र से बाहर हुआ, जिसमें उस बोली का पुट भी देखने को मिलता है। भूषण बैसवाड़े के रहने वाले थे इसलिए उनकी भाषा में अवधी शब्दों का सम्मिश्रण हुआ। ब्रजभाषा के पूर्व चूँकि अवधी काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी, ऐसे में भूषण की रचनाओं में इसकी बहुलता स्वाभाविक है। भूषण के समय दिल्ली और मेरठ के आस-पास अरबी, फारसी और हिंदी के मिश्रण से एक नयी भाषा जन्म ले रही थी, जिसे हम उर्दू या खड़ी बोली कह सकते हैं। औरंगजेब के राजदरबार से सम्बंधित छंदों में भूषण ने इसका प्रयोग किया। भूषण के नायक छत्रसाल बुंदेलखंड और शिवाजी महाराष्ट्र के रहने वाले थे। इसलिए भाषा को अधिकाधिक लोकग्राह्य बनाने के लिए बुन्देली और मराठी को भी अपनी भाषा में मिलाया। उस समय मुगलों की राजभाषा फारसी थी इसलिए मुगल दरबार से सम्बंधित छंदों में जीवन्तता लाने के लिए भूषण ने ऐसे शब्दों का जान-बूझ कर प्रयोग किया है।

भूषण के प्रमुख छंद दोहा, कवित्त, सवैया आदि हैं। उन्होंने सहज और सरल भाषा में छंद रचना का प्रयास किया इसलिए उनकी भाषा में तत्सम की अपेक्षा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। भूषण का काव्य वीर रस से युक्त होने के कारण ओज गुण से परिपूर्ण है। इनके काव्य में मुहावरों और लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए-

‘सिंह की सिंह चपेट सहै गजराज सहै गजराज को धंका।’ - लोकोक्ति
‘कोटि बंधियतु मानो पाग बांधायतु है’ - मुहावरा

‘शिवराज भूषण’ और फुटकर छंदों की भाषा में अंतर पाया जाता है। ‘शिवराज भूषण’ की भाषा की अपेक्षा फुटकर छंदों की भाषा अधिक उत्कृष्ट और मंजी हुई है।

7. निष्कर्ष

भूषण अपने युग के अन्य प्रसिद्ध कवियों से भिन्न हैं। रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्ति जहाँ श्रृंगार की थी और सभी बड़े कवि युगीन प्रवृत्ति के अनुकूल रचना कर रहे थे, वहीं भूषण ने वीर रस की रचना करके ख्याति प्राप्त की। भूषण चाहते तो किसी भी शासक के यहाँ जा सकते थे और तत्तकालीन राज्याश्रित कवियों की तरह श्रृंगार रस के छंद लिखकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन भूषण ने ऐसा नहीं किया। उनका जीवन भ्रमण में बीता। वे कई राजाओं के दरबार में गये लेकिन किसी के स्थाई दरबारी नहीं बने बल्कि लोकप्रिय, आदर्श एवं वीर राजाओं की प्रशंसा में छंद लिखे। भूषण का काव्य इतिहास सम्मत शुद्ध वीर काव्य है। उनके नायक इतिहास प्रसिद्ध वीर हैं।